**CBSE Test Paper 04**

**Ch-11 गहना से लौटती बेर**

1. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल
ध्यान-निद्रा त्यागता है,
चट दबा करे चोंच में
नीचे गले के डालता है!
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबा कर
दूर उड़ती है गगन में!

i. बगुला तालाब में किस तरह खड़ा है और क्यों?
ii. काव्यांश के आधार पर चिड़ियाँ की विशेषता लिखिए।
iii. चिड़िया कहाँ टूट पड़ती है और क्यों?

2. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में जो उगी है घास भूरी
ले रही वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी,
प्यास जाने कब बुझेगी!

i. काव्यांश के आधार पर तालाब का वर्णन कीजिए।
ii. पोखर किनारे पत्थरों को देख कवि क्या कल्पना करता है?
iii. तालाब की भूरी घास में लहरियाँ उठने का क्या कारण है?

3. चंद्र गहना से लौटती बेर कविता के आधार पर चित्रकूट की पहाड़ियों का वर्णन कीजिए।

4. चंद्र गहना से लौटती बेर पाठ के सन्दर्भ में अलसी के लिए ‘हठीली’ विशेषण का प्रयोग क्यों किया गया है?

5. कवि केदारनाथ अग्रवाल चंद्र गहना से लौटते समय कहाँ रुक गया था और क्यों?

6. बगुले के माध्यम से कवि केदारनाथ अग्रवाल क्या कहना चाहता है? इससे हमें क्या सीख मिलती है?

**CBSE Test Paper 04**

**Ch-11 गहना से लौटती बेर (Answer)**

1. i. बगुला तालाब में ध्यान लगाकर योगी की तरह एक टांग पर खड़ा है। वह मछलियों का इंतजार कर रहा है। जैसे ही कोई मछली उसके निकट आती है, वह अपनी ध्यान रूपी निद्रा को त्यागकर उस मछली को दबोच लेता है और गले के नीचे उतार लेता है।
   ii. काव्यांश में शिकार करने वाली चिड़िया सफ़ेद पंख और काले माथे वाली है। उसकी चोंच पीली है। यह चिड़िया अवसरवादी है। यह अत्यंत चतुराई से अवसर पाते ही अपने शिकार (मछली) पर झपट्टा मारती है और उसे चोंच में दबाए आकाश में उड़ जाती है।
   iii. पानी से कुछ ऊँचाई पर उड़ती चिड़िया जैसे ही तालाब कि उपरी सतह पर मछली को देखती है वैसे ही वह पानी में ही झपट्टा मारती है और मछली पर टूट पड़ती है, क्योंकि उसे अपनी भूख शांत करनी है।
2. i. कवि जहाँ बैठा है वहीं पास में एक तालाब है। उसका पानी स्वच्छ है। हवा के चलने से उसमें लहरें उठ रही हैं। इसकी तली में भूरी घास उगी है तथा इसके पानी में सूर्य का प्रतिबिंब बन रहा है, जो चाँदी के खंभे का आभास कराता है।
   ii. पोखर के किनारे कुछ पत्थर पड़े हैं जिनका एक भाग तालाब के पानी को छू रहा है। उसे देखकर कवि कल्पना कर रहा है कि ये पत्थर कब से पानी पी रहे हैं न जाने इनकी प्यास कब बुझेगी।
   iii. तालाब की भूरी घास में लहरें उठने का प्रमुख कारण यह है कि वहाँ हवा चल रही है और हवा के चलने के कारण तालाब का पानी भी लहरा रहा है। पानी लहराने के कारण तालाब के तल में उगी हुई भूरी घास में भी लहरियाँ उठ रही हैं।
3. चंद्र गहना से लौटते समय कवि प्राकृतिक सौंदर्य देखने में मग्न है। वह देखता है कि उसके सामने ही चित्रकूट की पहाड़ियाँ हैं जो दूर तक फैलीं, ऊबड़-खाबड़ तथा बेडौल हैं। इनकी ऊँचाई एक सी नहीं है। पहाड़ी की पथरीली जमीन उर्वर नहीं है। इन पर कॅटीले जंगली पेड़ ही उगते हैं। पहाड़ी पर रीवाँ के काँटेदार पेड़ हैं जो देखने में बहुत कुरूप हैं। पहाड़ी की इस ज़मीन को बाँझ भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ इन छोटे काँटेदार कुरूप पौधों के अलावा कोई और पेड़ नहीं उगता है।
4. अलसी के लिए हठीली विशेषण का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि-
   i. किसान ने उसे चने से अलग कतार में बोया होगा, पर वह हठपूर्वक चने के पास उग आई है।
   ii. दुबले शरीर वाली अलसी बार-बार हवा के झोंके से झुक जाती है और उठकर खड़ी हो जाती है और फिर चने के बीच नज़र आने लगती है।
   iii. उसकी हठ है कि उसके सिर पर सजे नीले फूलों को छूने वाले को ही अपना दिल दे देगी।
5. कवि चंद्र गहना से लौटते समय खेत की मेड़ पर रुक गया। कवि जहाँ रुका था, वहाँ चारों ओर प्राकृतिक सौंदर्य बिखरा पड़ा था। प्रकृति प्रेमी कवि उस सौंदर्य को देखकर आगे न बढ़ सका और प्रकृति के एक-एक अंग का सौंदर्य निहारने लगा।
6. कवि देखता है कि तालाब में बगुला ध्यानमग्न अवस्था में खड़ा है। जैसे ही यह किसी मछली को देखता है यह अपना ध्यान भंगकर उसको पकड़कर खा जाता है। इसी प्रकार हमारे समाज में भी कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो बाह्य तथा दिखावटीपन में तो बड़े पवित्र, नेक तथा समाज सुधार के उद्देश्यपूर्ण कार्य में लगे दिखाई देते हैं, किंतु वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत होती है।